

Topography

इसके अन्तर्गत पृथ्वी की वाष्पी परत की केनवट का अध्ययन
किया जाता है। (स्थलाकृती विज्ञान)

Pedology - (सूक्ष्मविज्ञान) :- इसके अन्तर्गत मिट्टी का अध्ययन
करते हैं।

Note :- Pedology के अन्तर्गत अध्यापन (Teaching) की कला सिखी
जाती है।

उच्चावच (Relief) :- पृथ्वी के उड़-खाक आकृति को उच्चावच
कहते हैं इसे तीन श्रेणियों में रखा जाता है।

* प्रथम श्रेणी के उच्चावच :- इसमें महाद्विष तथा महाघाट आते हैं।

* द्वितीय श्रेणी के उच्चावच :- इसमें महाड्हिपों पर बनने वाली आकृति को
रखते हैं जैसे :- पर्वत, पहाड़, मैदान, मरुस्थल etc.

* तृतीय श्रेणी के उच्चावच :- इसमें काट-झाट (अपरदन) से बनने वाली
स्थलाकृतियों को रखते हैं जैसे - v आकार की
धारी, त्रिकार की धारी, जलप्रपात, लौशस etc.

अपक्षय → (Weathering) :- चट्टानों का छुटना अपक्षय कहलाता है।

बल तथा दाव के द्वारा छुटना मौतिक
अपक्षय कहलाता है। अब कि अम्ल या धार के माध्यम
से छुटना रसायनिक अपक्षय कहलाता है।

* चुना पत्थर पर मौतिक तथा रसायनिक दोनों अपक्षय का
प्रभाव पड़ता है।

अपरदन (Erosion) :- चट्टानों में धिलावर की अपरदन कहते
हैं अपरदन की क्रिया वायु, नदी, मुमिगत जल, चान
बर्फ etc द्वारा होती है।

निष्पत्ति (Disposition) :- अपरदन के पूछ स्वरूप निकाला गया जाद (कचरा) जिस स्थान पर जमा हो जाता है।
उसे निष्पत्ति कहते हैं निष्पत्ति कि किया निचले हाल पर होती है।

नदी हारा निर्मित स्थलाकृतिया

उद्गम :- नदियाँ जिस स्थान से निकलती हैं उसे उद्गम कहते हैं।

सुखना :- नदियाँ जहाँ सागर में मिल जाती हैं उसे सुखना कहते हैं।

नदियों की तीन अवस्थाएँ होती हैं:-

1. युवा अवस्था :- इसमें नदिया पर्वतिय हाल पर होती है और केवल अपरदन करती है।

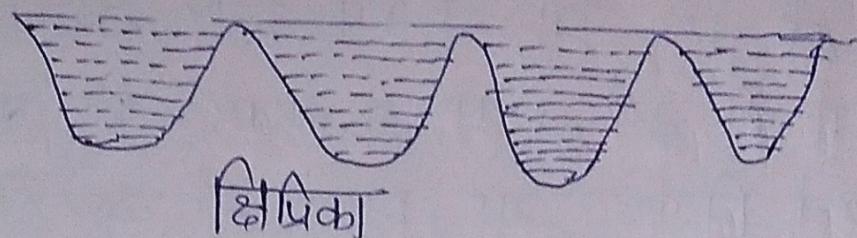
2. मौद्रा अवस्था :- इससे नदिया मैदानी क्षेत्र में पहुँच जाती है और अपरदन के साथ-साथ निष्पत्ति भी करती है।

3. वृद्धा अवस्था :- इसमें नदिया अपने मुहाने तक पहुँच जाती है और दाल कम होने के कारण केवल निष्पत्ति करती है।

प्रवणता (Gradient) :- किसी स्थल के समूद्र से ऊर्ध्वांश की (gradient) प्रवणता कहते हैं।

प्रवणता जितनी अधिक होगी उसके अधिक होगा नदियों की शक्ति उनकी प्रवणता से मिलती है।

क्षिपिका :— नदियों जब पर्वतों द्वेरा पर होती है तब मुख्यम्
चटान को कॉट देती है किरु कठोर चटान को
नहीं काट पाती जिस कारण उकड़-खाकड़ आकृति का
निर्माण होता है जिसे क्षिपिका कहते हैं

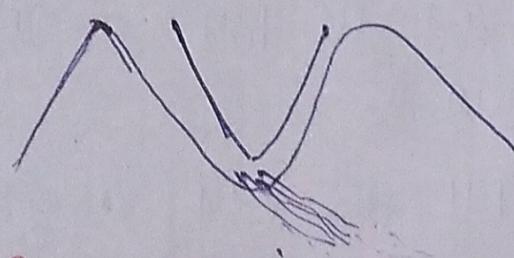


V आकार की धारी :— नदियों जब दो पर्वतों के बिच से
निकलती है तो V आकार की धारी का निर्माण
करती है।

गार्ज :— V आकार की धारी जब गहरी हो जाती है तो उसे
गार्ज कहते हैं। सिंधु, सतलज तथा ब्रह्मपुत्र नदियाँ
गार्ज निर्माण करने वाली प्रमुख नदियाँ हैं।

कैनियन तथा I आकार की धारी :— यह गार्ज से भी गहरी होती
है इसका दाल विलकुल सिधा होता है।

सर्वते कैनियन U.C.A में कोलोरोडो नदि पर स्थित
ग्राह कैनियन है।



जलप्रपात—(Water fall) :— नदियों जब ऊर्ध्वांश में निचे की
ओर गिरती हैं तो जल प्रपात का निर्माण
करती है अष्ट वर्गीय या पठारी द्वेरा में ही
पाए जाते हैं।

अवनमन कुण्ड : नलप्रपात के अपमान से नदियाँ अब
निचे गिरती हैं तो एक गढ़ा या कुण्ड का निर्माण
कर देनी हैं जिसे अवनमन कुण्ड कहते हैं।

३ आकार की घाटी - नदियाँ मैदानी क्षेत्र में मुलायम चट्टानों
को काँट देनी हैं तथा कठोर चट्टानों को होड़
देनी हैं इस कारण ३ आकार की घाटी करनी हैं
इसे निरापद वा विश्व प्रभी कहते हैं।

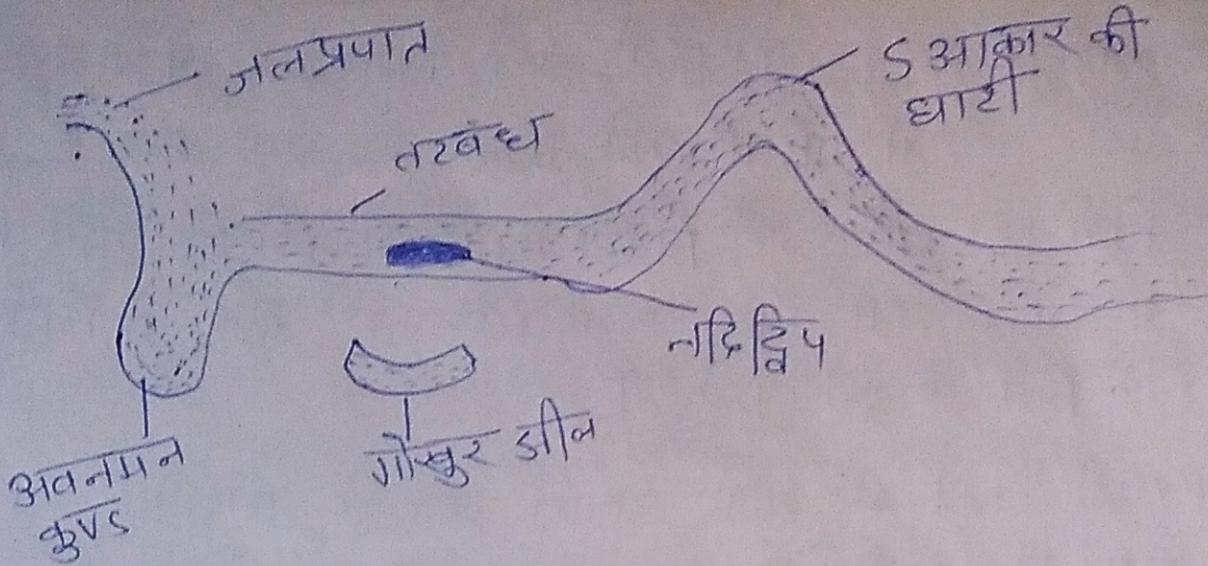
गोखुर झील : १ आकार की घाटी जब सिधी हो जाए है तो
वह गोखुर झील का निर्माण करती है इसे परिवर्त
झील भी कहते हैं।

तटवंश : मैदानी क्षेत्र में नदियाँ अपने किनारे पर सिल्ट
(जादा कचरा) को जमा कर देती हैं इसे
तटवंश कहते हैं।

नदि त्रिप : अब नदिया अपने लिये मार्ग में ही सिल्ट
को जमा कर देती है तो नदि त्रिप का
निर्माण होता है।

* किंशुक का सर्वसे छड़ा नदि त्रिप मांजूली है जो ब्रह्मपुत्र
नदी पर असम में है।

Note : तटवंश तथा नदि त्रिप बहुत ही उपजाऊ होते हैं।

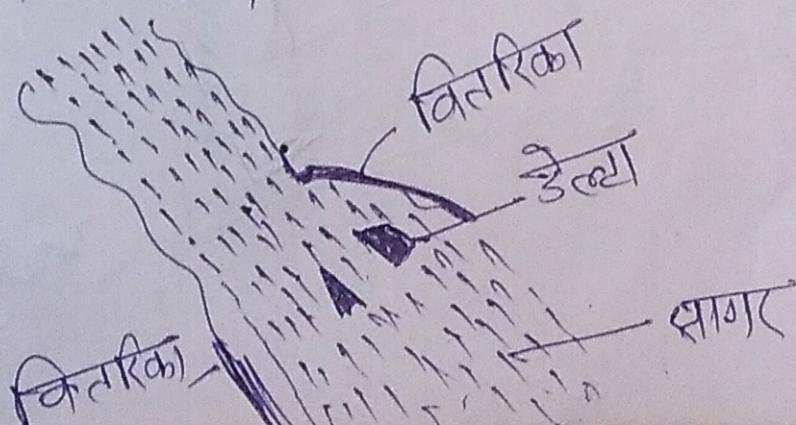


वितरिका :- नदियाँ अब मुहाने पर पहुँचती हैं तो द्वाल कम हो जाता है। जिससे नदियाँ कई शाखाओं में कट जाती हैं। इन शाखाओं को वितरिका कहते हैं।

डेल्टा → दो वितरिकाओं के बीच अब गाढ़ (सिल्ट) जमा हो जाता है तो वह प्रिमुज के समान आकृति का लेता है। जिसे डेल्टा कहते हैं। यह बहुत ही उपजाऊ होता है। सबसे बड़ा डेल्टा गंगा और ब्रह्मपुत्र का डेल्टा है। जिसे सुखरकन का डेल्टा कहते हैं।

Note → अब नदियों के वितरिकाओं की संख्या अधिक हो जाती है तो वह पही के पैर के समान फिल्म लगती है। और इससे बनी डेल्टा को पहीपात डेल्टा कहते हैं।

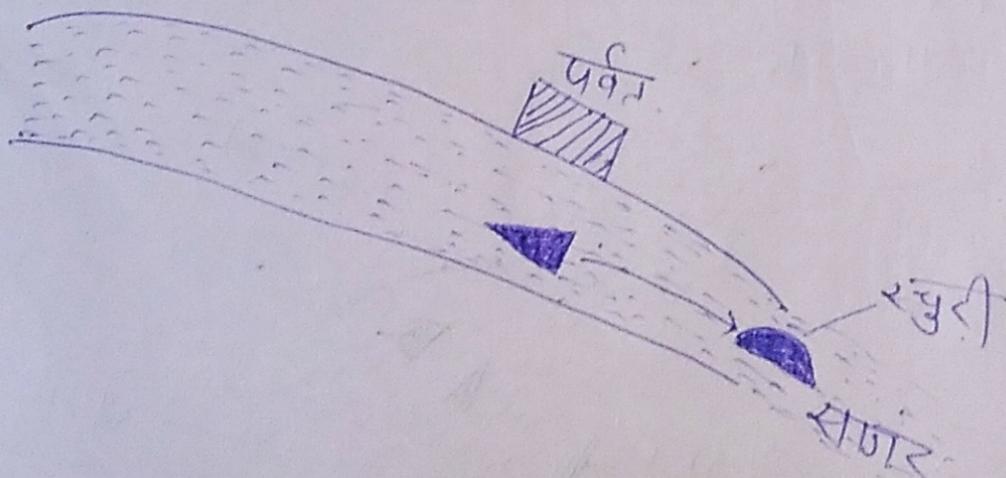
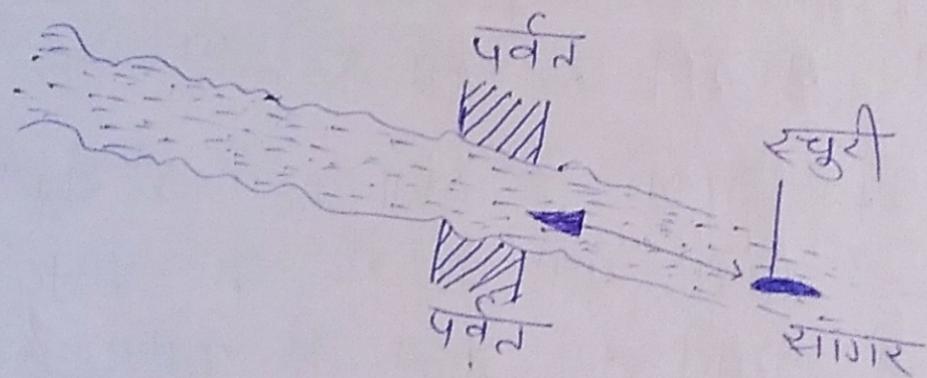
* मिसिसिपि नदी (U.S.A) पहीपात डेल्टा बनती है। उसका डेल्टा सबसे चौड़ा है।



ज्वालनद (एस्चुरी) :- जब किसी नदी के मुहाने पर पर्वत खड़ा हो तो नदिया अपने सिल्ट को जमा करके किनारे पर वितरिका क्षाकर नहीं निकल सकती हैं क्योंकि दोनों किनारों पर पर्वत होता हैं अतः यह सिल्ट को सागर में गिरा देती है जिसे एस्चुरी कहते हैं।

- * एस्चुरी बनने से सागर का तट खड़ा हो जाता है।
- * गोवा का मार्माणिका वन्दणाह एस्चुरी पर स्थित है।
- * सबसे बड़ा एस्चुरी गोदावरी नदी का है।
- * नर्मदा तथा तापी पश्चिम की ओर एस्चुरी बनती है अब कि श्री दमोदर और गोदावरी पुर्व की ओर एस्चुरी आती है।

Remark :- जब नदी के किसी एक होड़ पर पर्वत खड़ा है तो जिस ओर पर्वत होता है उस ओर एस्चुरी बनता है और जिस ओर पर्वत नहीं हो उस ओर उल्टा बनता है।



Note :- गोदावरी नदी एस्चुरी एवं डेल्वा दोनों जमाती हैं।

- * नदियाँ जब हीटे - पर्वत तथा उवड़ - खाबड़ स्थल को काटकर बराबर कर देती हैं तो उसे सम्प्रवय मैदान कहते हैं।

भुमिगत जल द्वारा निर्मित स्थलाकृतियाँ

प्रधानतम् वाले हेत्तो भुमिगत जल द्वारा स्थलाकृति का निर्माण चुना - पत्थर की प्रवणता वाले हेत्तो में होती है।

- * जिस स्थान पर चुना पत्थर कि आविकता होती है उसे कार्ब प्रवेश कहते हैं।

- * युरोप के धुकोस्लाविया मे तथा मध्यप्रदेश के हिमाचल पर्वत मे कार्ब प्रवेश पाए जाते हैं।

- * भुमिगत जल जब भुमि मे प्रवेश कर जाता है तो वह संदर एक गुफा / कंदरा का निर्माण करता है इन गुफाओं मे कठोर चर्याने भी पायी जाती हैं जो इन गुफाओं को गिरने से रोकती हैं।

- * गुफाओं के प्रारंभिक भाग को अंधी घाटी कहते हैं।
छोलरन्ध्र :- यह कार्ब प्रदेश के उपरी भाग मे बनती है इसके द्वारा सतह पर हीटे - हीटे हिफ्र हो जाते हैं।

डोलाइन :- यह छोलरन्ध्र के आकार मे बड़ा होता है।

थुवाला :- यह डोलाइन से बड़ा तथा गहरा भी होता है।

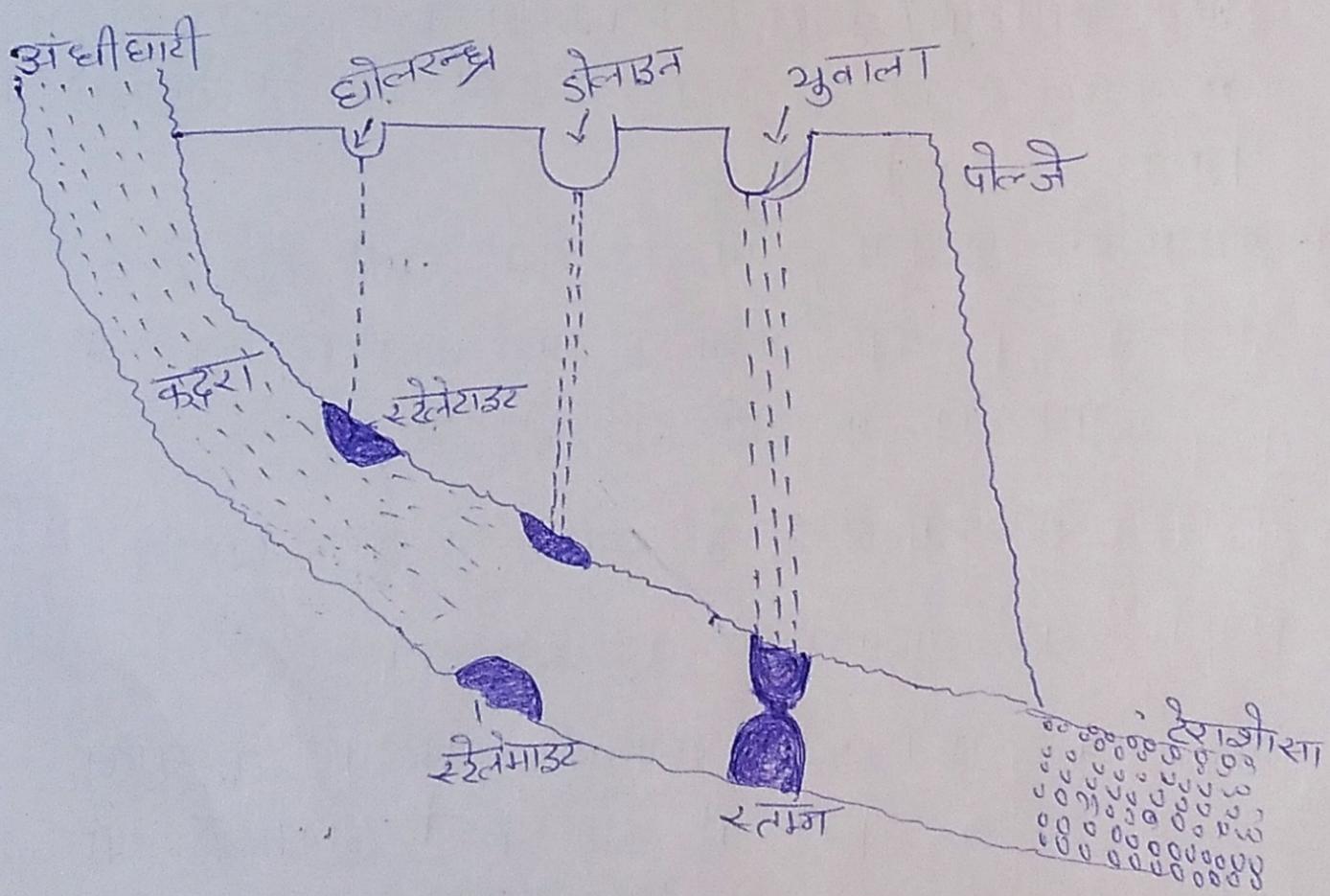
पोल्जे :- जब कार्ब प्रवेश अत्यधिक अपरदन के कारण कर कर निचे की ओर गिरने लगता है तो इसके दाल को पोल्जे कहते हैं।

टैराशोसा :- जीले के कारण अत्यधिक अपरदन होता है जिसमें पुना पत्थर के साथ-साथ लाल रंग की टोलौमाइट धृत्याने भी होती है इनके निषेपण को टैरा-शोसा कहते हैं।

स्टेलैटाइट :- कंदरा के ऊपर की और लट्की स्थलाकृति को स्टेलैटाइट कहते हैं इसका निमित्त कम अपरदन के कारण होता है।

स्ट्रैलैमाइट :- जब अपरदन अधिक होता है तो निचे की और चुना पत्थर का अभाव हो जाता है जिसे स्ट्रैलैमाइट कहते हैं।

केंद्रा स्तम्भ :- जब स्टेलैटाइट तथा स्ट्रैलैमाइट आपस में मिल जाते हैं तो उसे केंद्रा स्तम्भ कहते हैं।



सागरी नल हारा निर्मित खलाहूत

- * सागरी नल हारा नहो पर खलाहूत का निर्माण किया जाना है।
- * सागरी नल हारा खलाहूत का निर्माण तर्हो हारा होता है।
- * सागरी तर्हो की उत्पत्ति कौशिलिष का स्था पवनों के कारण होता है।

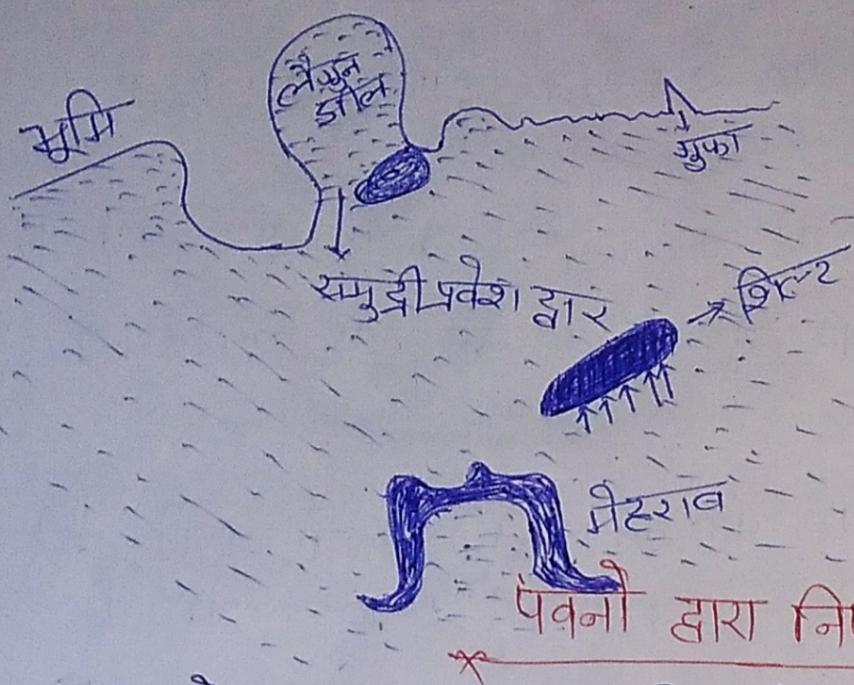
समुद्री गुफा : जब समुद्र तट पर पर्वत होते हैं तो समुद्री लहरें इस पर्वत को बिचे से काट देती हैं और गुफा का निर्माण कर देती है।

मेहराब : जब समुद्र में कोई पहाड़ी पारी जाने हैं तो उसमें भी गुफा का निर्माण होता है और जब वह गुफा पार ले जाने हैं तो वह मेहराब कहते हैं।

लेंगुन झील : जब सागरीय तट पर सिल्क के जमाव से झील का निर्माण होता है तो उसे लेंगुन झील कहते हैं। लेंगुन झील खारे पानी का होता है।

* लेंगुन झील को क्याल या पश्च सागर झील भी कहते हैं।

दंतुरित स्त : सागरीय तट जब कटा-पिटा था उबड़ खाकड़ होता है तो उसे दंतुरित तट कहते हैं। यह बंदरगाह निर्माण में सहायक होती है।



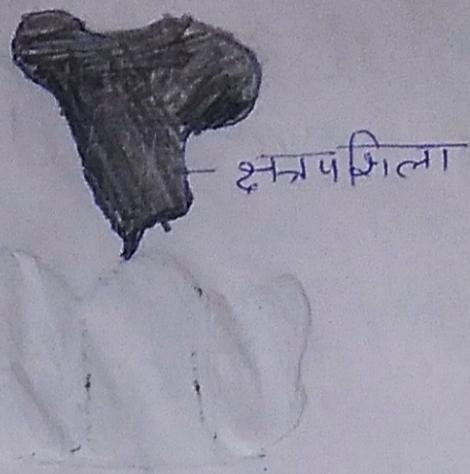
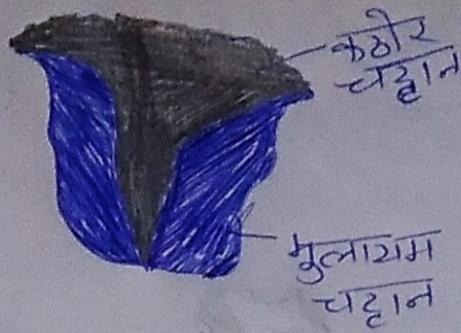
पवनों द्वारा निर्मित स्थलाकृति

उर्ध्वणः जब वायु किसी घटान में टकराती है।
उर्ध्वण कहते हैं।

अपघर्षणः वायु में उपस्थित घुलकण जब किसी घटान से टकराते हैं तो उसे अपघर्षण कहते हैं।

सानिधर्षण → वायु में उपस्थित घुलकण जब आपस में टकरा कर हटने लगते हैं तो उसे सानिधर्षण कहते हैं।

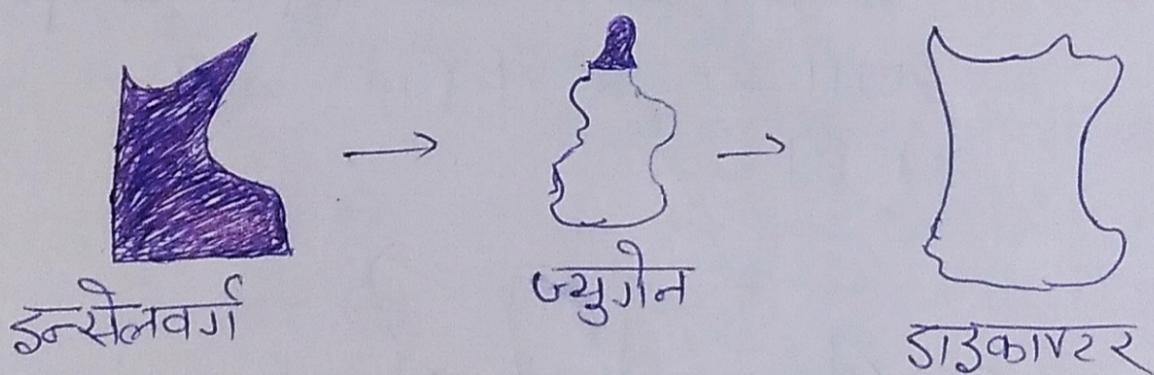
क्षत्रपश्चिला: जब किसी जड़े घटान के निचे मुलायम घटान पाई जाती है तो वायु मुलायम घटान की अपशिष्ट कर देती है जिससे हामा के समान आकृति बनते हैं जिसे क्षत्रपश्चिला कहते हैं।



इन्सेलर्वा: मखस्थल में कठीर चट्टान टिले को इन्सेलर्वा कहते हैं।

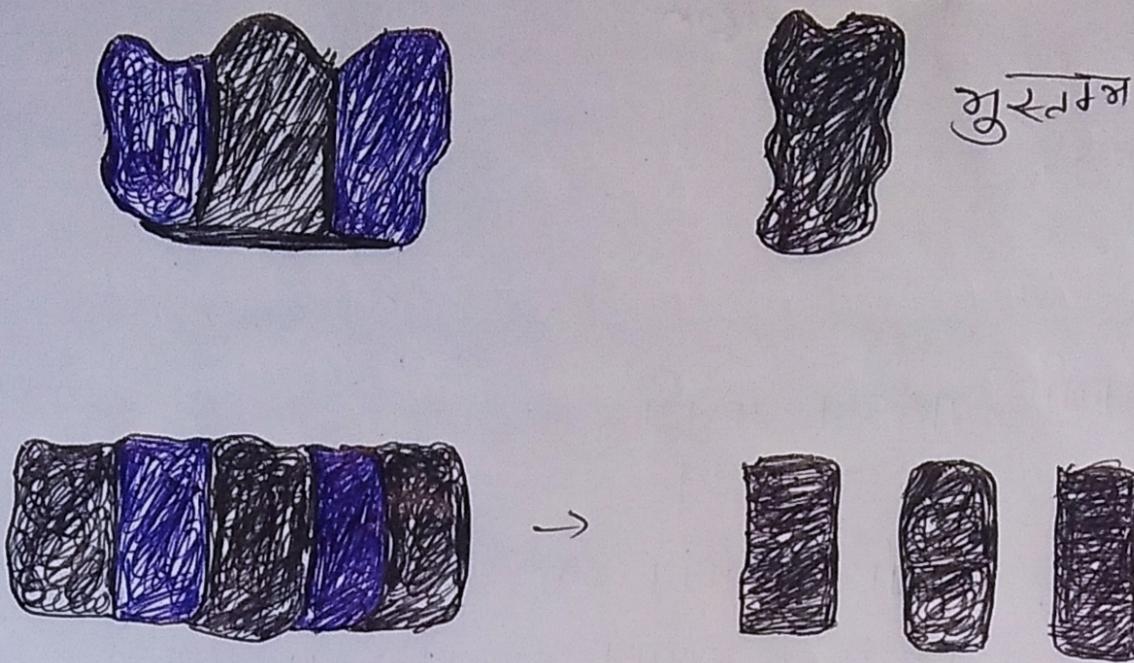
ज्युगेन: इन्सेलर्वा को पवने उपर के काट देती है तो इबात के डिला के समान आकृति बनती है। जिसे ज्युगेन कहते हैं।

डाइकार्पर: जब इन्सेलर्वा की छाएँ चारों ओर से काट देती हैं तो चतुष्पलकीय आकृति बन जाती है। इन चतुष्पलकीय आकृति को डाइकार्पर कहते हैं।

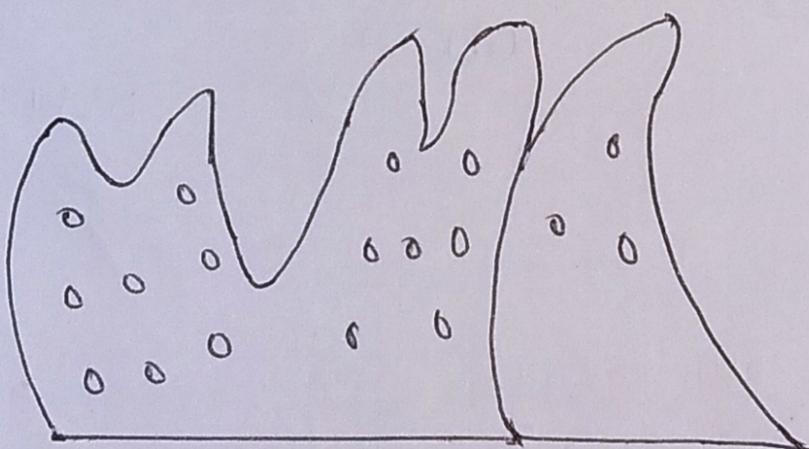


मुस्तम्भ: जब किसी कठीर चट्टान को दूनों और मुलायम चट्टान पाई जाती है तो पवने मुलायम चट्टान को अपरदित कर देती है। जिसे स्तम्भ की आकृति बन जाती है। जिसे मुस्तम्भ कहते हैं।

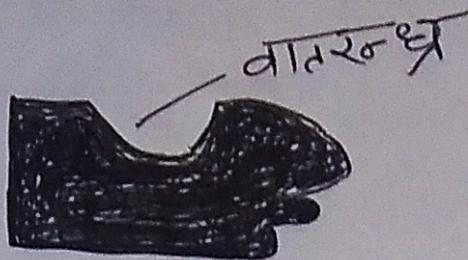
थारडेड़ :- जब कठोर तथा मुलायम चट्टाने समानीतर पायी जाती है तो उसमें का एक क्षार बन जाता है जिसे थारडेड़ कहते हैं।



जालीदार शीला :- महसूलीय द्वेरा में पवने पहाड़ियों पर छिक्कुमा आकृति बना जाती है जिसे जालीदार शीला कहते हैं।



वातरन्ध्र :- पवर्ती जब मलस्थलीय मुमी में (जटी) गद्दा का निर्माण करती है तो उसे वातरन्ध्र कहते हैं।



वाल्सन झील :- मलस्थलीय फ्लेब में पवर्ती से खिरे हुए झील को वाल्सन झील कहते हैं।

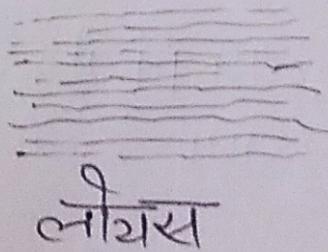
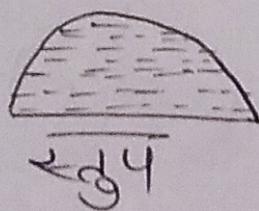
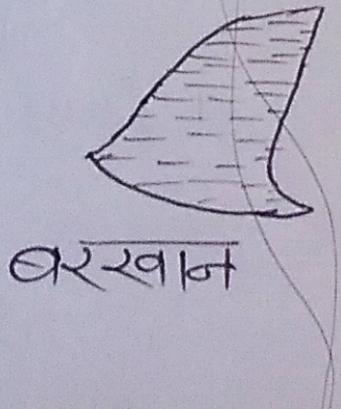
Ex - अजमौर का आगा यागर।

- वाल्सन झील जब सुख जाता है तो उसे — कहते हैं
यह नमक का अच्छा ओत होता है।

बरबान :- मलस्थलीय फ्लेब में आर्द्धचन्द्रकार बल्लु के टिले को बरबान कहते हैं।

वालु का स्त्रुप :- मलस्थलीय फ्लेब में बल्लु के चन्द्रकार टिले को स्त्रुप कहते हैं।

लोयस का मैदान :- मलस्थलीय फ्लेब में बालु वायु द्वारा ड़ाकर ले जाती है और जिस स्थान पर इसे निरैपि दिया जाता है उसे लोयस का मैदान कहते हैं। लोयस का मैदान लोयस का मैदान उपजाऊ होता है। बड़ा लोयस का मैदान चीन में है।

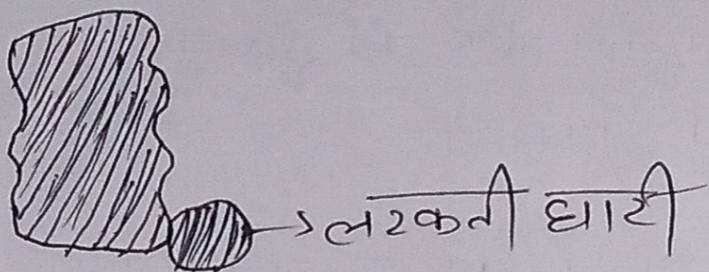


हिमनद द्वारा निर्मित स्थलाकृति

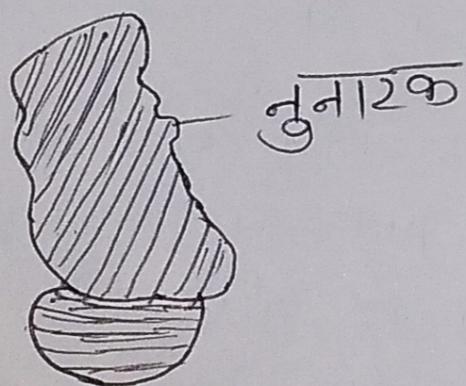
शुद्ध हिमनद द्वारा अपरदन का कार्य नहीं होता है किन्तु जब हिमनद में चट्टान या लकड़ी उपस्थित हो तो कह अपरदन करने लगते हैं।

'U' आकार की घाटी :- वर्षासी द्वेष में दो पहाड़ों के बीच 'U' आकार की घाटी बनते हैं।

लटकती घाटी :- जब किसी बड़े हिमनद से कोई छोटा हिमनद आकार भूमि आता है तो उसे लटकती घाटी कहते हैं।



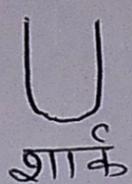
नुनारक :- जब किसी छोटे हिमनद के ऊपर बड़ा हिमनद आ आता है तो उसे नुनारक कहते हैं।



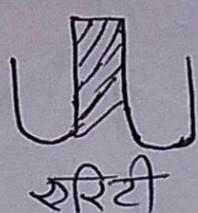
शार्क :- हिमनद द्वेष में बहने वाली गति को शार्क कहते हैं।

एरिटी :- जब किसी चट्टान के ढोने और शार्क का निर्माण हो आता है तो उसे एरिटी कहते हैं।

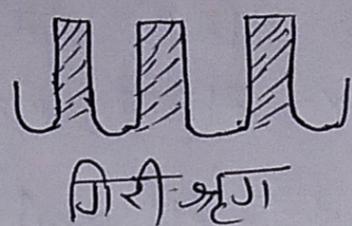
गिरिशृंग :- जब ऐरिएट एक अनुखला के रूप में होते हैं तो
उसे गिरिशृंग कहते हैं।



शांक



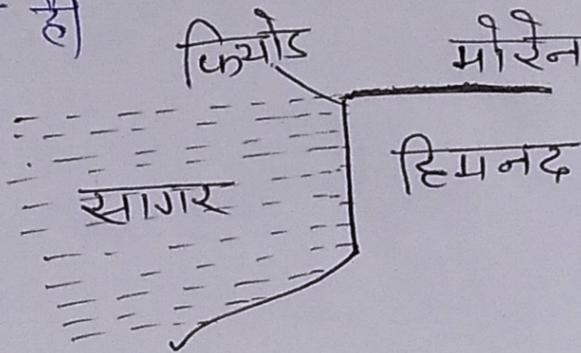
रिटी



गिरीशृंग

फिर्याड तट :- वर्फ़िले छेत्र में समुद्र के किनारे कि खड़ी दाल
को फिर्याड तट कहते हैं।

मौरेन :- फिर्याड तट के ऊपर के वर्फ़िले सह को मौरेन
कहते हैं।



रासमुयन :- जब वर्फ के निष्पेण मैड के गल के समान
हो जाता है तो उसे रासमुयन कहते हैं।

इमलिन :- जब हिमनद के निष्पेण इल्या नाव के समान हो जाता है तो उसे इमलिन कहते हैं।



हिमोड़ :- जब हिमानी का निष्पेण एक चादर के समान
समतल रूप में होता है तो उसे हिमोड़ कहते हैं।

वहिंजात वल :- पृथकी सरह पर उत्पन्न वह वल जो पृथकी के सरह को उकड़-खार बनाने का प्रयत्न करता है। वहिंजात वल कहलाता है।

Ex- अपक्षय, अपरदन, तथा निशेषण etc.

अन्तरभात वल :- यह पृथकी के अन्दर से उत्पन्न होता है। और पृथकी के ऊपरी सरह को वरावट करने का ~~संख्यक~~ प्रयत्न करता है।

Ex- मुक्कंप, अचला मुक्की